B.M.A COLLEGE , BAHERI,DARBHANGA

(A CONSTITUENT UNIT OF LNMU)

BA DEGREE-2

HISTORY HONS.

PAPER-3

UNIT-III(A)

DEPARTMENT OF HISTORY

PANKAJ KUMAR MISHRA

DATE-05/09/2020

TOPIC:- विजयनगर साम्राज्य की प्रशासनिक संरचना

PART-3

Scanned with CamScanner

विजयनगर साम्राज्य

प्रांतीय प्रशासन :- विजयनगर साम्राज्य को अग्रलिखित रूप में विभाजित किया जा सकता है :-

राज्य / साम्राज्य

⇓

मंडलम (प्रांत) ⟶ (राज्यपाल/प्रांतपति, राजपरिवार से)

⇓

वलनाडु (कोट्टम) ⟶ दंडनायक

⇓

नाडु

⇓

स्थल या मेल ग्राम (50 ग्राम पर मेल ग्राम)

⇓

ग्राम (उर / सभा)

नायंकर व्यवस्था

यह व्यवस्था विजयनगर की प्रांतीय प्रशासन की विशिष्ट व्यवस्था थी। इस व्यवस्था के स्वरूप को लेकर विवाद है पर सामान्यतया नायंकर एक प्रकार से सैनिक सामंत थे। सेनानायकों को नायक कहा जाता था जो भूसामंत के रूप में स्थापित हुए।

नायंकर व्यवस्था के तहत सेनानायकों को वेतन के बदले या सेना के रखरखाव के बदले अमरम् भूमि नामक विशेष भूमि खंड दिया जाता था। उस भूमि को प्राप्त करने वाले अमरनायक कहलाते थे। वह इस भूमि से प्राप्त आय का एक भाग केन्द्रीय खजाने में जमा करता था। शेष भाग से सेना का रखरखाव और अन्य खर्च किया जाता था। अमरम भूमि पर शांति एवं सुरक्षा की जिम्मेदारी उसी की होती थी।

पोलीगर — ये नायकों के अधीन भूस्वामी होते थे।

महामंडलेश्वर — तुलुववंशी शासक अच्युतदेवराय के समय इस नये अधिकारी की नियुक्ति नायकों पर नियंत्रण के उद्देश्य से की गयी थी। वास्तव में नायंकर व्यवस्था विजयनगर प्रशासन में सैन्य एवं सामंती तत्वों के प्रभाव का सूचक है।

Scanned with CamScanner

महामंडलेश्वर की नियुक्ति सैद्धांतिक रूप से राज्य द्वारा होती थी पर व्यवहार में यह पद वंशानुगत था। इन अधिकारियों को भी वेतन के बदले लगान मुक्त भूमि अनियम दी जाती थी।

इसका कार्य पहले से चली आ रही। स्थानीय सभा जैसा ही था। लेकिन ये स्थानीय स्वशासन का प्रतिनिधित्व नहीं करते थे। इसका कारण इनकी नियुक्ति केन्द्र से होना था।

अन्य महत्वपूर्ण अधिकारी :-

महानायकाचार्य : राज्य - ग्राम के बीच मध्यस्थ

समयाचार्य देशरि : सामयिक एवं धार्मिक मामलों का निरीक्षक

तलईच्चारि : पुलिस

साम्राज्य व्यवस्था की समीक्षा।

सकारात्मक तत्व – Ⓐ साम्राज्य के संदर्भ में राजनीतिक एकीकरण काफी हद तक

Ⓑ प्रजाहित को राज्य का आदर्श

Ⓒ धर्मनिरपेक्ष स्वरूप

Ⓓ प्रशासन में स्त्रियों की भागीदारी

नकारात्मक तत्व

Ⓐ नायंकर व्यवस्था :- सामंती प्रधानता के कारण साम्राज्य के कमजोर स्थिति में पतन में भूमिका।

Ⓑ सैन्य तत्व का प्रभाव – आवश्यक युद्ध जनजीवन पर प्रतिकूल प्रभाव।

Ⓒ चोल स्थानीय स्वशासन की विशिष्टता लगभग समाप्त।

Ⓓ पुर्तगालियों को बसाया जाना, जो आगे अन्य हस्तक्षेप भी।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि विजयनगर राज्य की प्रशासन व्यवस्था विविध स्तरों पर विविधतापूर्ण है। परंपरा के तत्वों के साथ ही उसमें नये परिवर्तनों का भी समावेश हुआ जो उसकी विशिष्टता बनी।

Pankaj
05/09/2020

Scanned with CamScanner